Wohlergehen Suça. 1,2,20. 20,2. शरीरीपचरापचय 30,12. 2,139,4. 196, 7. मांसापचय 1,273,3. 287, 19. पिउनेपचय 2,280,3. तर्तेषामहमत्पुत्राणां ज्ञानापचय भवतः प्रमाणम् अम. 8,13. MBa. 1,5229. न वक् तव धर्मज्ञ पश्याम्युपचयं क्वचित् 2,1458. येषां राज्ञा अक् स्पातामुपचपापचया आग. III, 131. मक्त्युपचयं वर्तते in einer Inschr. in Z. f. d. K. d. M. IV, 153. Riéa-Tab. 3,175. Çıçup. 9,29. एकोपचयम् je um Eines mehr Kity. Ça. 7,7,17. — 2) Zusatz: प्रेषोपचय Kity. Ça. 10,1,19. 5,6. — 3) das 3te, 6te, 10te und 11te Haus vom Lagna Ind. St. 2,273. 281.

उपचर (von चर् mit उप) m. in comp. mit सु 1) Zugang: पिता पुत्राय सूपचर: (Erkl. von सूपायन) Çar. Ba. 2,3,4,30. — 2) Behandlung, Kur: लाभेदी त्राण: सूपचर: Suça. 1,83,12. — Vgl. उपचार.

उपचर्षा (wie eben) n. das Hinzutreten: सूपचर्षा Çat. Br. 1,9,1,8. उपचर्म oder उपचर्मम् (von उप + चर्मन्) adv. an der Haut u. s. w. P. 5,4,109,8ch. Vop. 6,67.

उपचर्ष (von चर् mit उप) 1) adj. zu verehren: श्रामिवद्योपचर्षा वै ब्रा-स्मणा: MBu. 13,396. उपचर्ष: स्त्रिया साध्या सततं देववत्पति: M. 5, 154. R. 3,3,3. ये (पितरः) च यैक्तपचर्या: स्पुर्त्नियमै: M. 3,193. — 2) f. ेर्या Behandlung (medic.) H. 473. Halij. im ÇKDa.

उपचाक m. N. pr. eines Mannes gana बाद्धारि zu P. 4,1,96.

उपचार्षिन् (von चि mit उप) adj. zunehmend, dem es wohlgeht (?): वृ-ह्यापचापित्वात् MBB. 14, 2198.

उपचाटम (vom caus. von चि mit उप) m. ein best. Opferseuer P. 3,1, 131. Vor. 26,11. AK. 2,7,20. उपचाटमपुड P. 3,1,123. व्हिर्सम Vartt.

उपचार (von चर् mit उप) m. 1) das Hinzutreten zu, Aufwarten, Bedienen, Bezeigung einer Höflichkeit, zuvorkommendes —, höfliches Benehmen H. 497. an. 4,241. मधस्तादिव क् श्रेयस उपचार: Çar. Br. 1,1,1,11. उत्तर्तं उपचारा वे यत्तः 3, 4, 2, 19. 8, 6, 1, 19. 9, 3, 4, 11. म्रनेन — सामि-लकस्योपचारं कुर्वता प्रभूतो व्ययः कृतः Рक्षेष्रकः 138, 14. राजोपचार् ४७nigsdienst VIKR. 56,9. VID. 137. उपचाराभिचाराभ्यां धर्ममात्राक्यस्व वै МВн. 1, 4757. 3902. 14, 1629. Sav. 3, 21. वधूभिरूपचारेण प्रतिता 15, 174. ताम् – मक्विँरात्मनः समैः । पद्मावती पद्माकामम्पचीरै ह्रपाचरत् Катиль 16,29. 25,69.116. उपचारिक्रया M. 8,357. न ते गात्राणि (subj. auch zu उपचार्) उपचार्मर्क्ति Çik. 66. कुप्तीपचार् स्तत्साच्या VID. 310. मिट्योप-चौर्वशीकृतानाम् Hit. I, 72. उपचार्परिश्वष्ट dem man nicht mehr höflich zuvorkommt 127. उपचाराञ्जलिखिन्नकृत्ता Rage. 3, 11. यदकं नापचारेण ब्रुयाम् R. 2,52,36. उपचारेण संयुक्तम् (वाक्यम्) 3,44,10. उपचारपरीतता (वाचः) н. ६५. भारतप्रसिद्धे ऽनत्ररापत्ये ऽश्वत्यामि द्रीणायन इति प्रयोग-स्तुपचारातु P. 4,1, 103, Sch. उपचारपदं न चेदिदम् wenn dieses nicht bloss artige Worte wären Kumaras. 4, 9. वाक्यापचार Höflichkeiten im Ausdruck R. 2,44,24. सापचारं तदा राममूच्: 5,90,5. MBn.1,826. नान्पचा-र्पत्ता nicht mit unhöftichem Betragen ausgestattet R. 5,13,69.-2) das Verfahren mit Etwas: एव इष्ट्रित्पचार: Çar. Br. 1,3,5,10. 6,3,31. 2,2, 2,19. एष उ गृहाणामुपचारः 2,4,1,14. 11,5,1,1. या वाव कर्म करेगति स एव तस्योपचारं वेद 6,5,4,17. KAUG. 140. प्रतिजयाक् तत् (श्रस्त्रम्) — स-मस्रं सोपचारं च समातिविनिवर्तनम् MBn. 3, 1690. ब्रह्मचेर्यापचार् M. 1, न्दिम्ब्येषु विप्रेषु Pankat. 158, 2. म्राशीविष इव इक्ष्यचारा mit der schwer umzugehen ist Pankat. 203,5. = व्यवहार H. an. 4,241. — 3) medic. Behandlung, Kur H. 473. an. 4,241. ड्रापचार Sugn. 1,83,13. विषमेणीपचारेण 117, 7. 186, 2. शीतीपचार 2,271, 12. Райкат. 43, 9. वि-विकाशिशिरोपचाराबान्यच्क्ररणमस्ति Vikk. 19, 17. मिध्योपचार् Suçk. 2, 350,7. - 4) das Betragen, Benehmen, Verhalten: एष ਤ तत्र दीनित-स्यापचारः ÇAT. Ba. 3,1,4,10. वैश्यश्रद्धापचार् M. 1,116. साधूनामुपचार्त्तः R. 5,32,8. उपचारेरण्चिभिः संप्रयुव्य च तापसान् 3,1,22. शुच्युपचार ब्ला. N. 23, 7. ॡ्रद्यविहितवैर्। गूढमस्त्रीपचाराः Раккат. III, 40. अवेशसदशप्र-णियापचाराम् Makkin. 123, 18. म्रचेतनेखपि चेतनावडपचारा दश्यते Pat. zu P.4,3,86. — 5) Ceremonie: इत्यं विधिन्नेन पुराव्तिनेन प्रयुक्तपाणिग्रक्-णोपचरि Kumiras. 7,86. क्रुप्तापचारा चत्रस्रवेदीम् 88. — 6) womit man Imd eine Ausmerksamkeit erweist, Blumenkränze u. s. w.: प्रकीर्णाभि-नवापचारम् (राजमार्गम्) RAGH. 7,4. मञ्चेषु — उपचार्वतम् 6,1. Darbringung, Geschenk H.737. Vgl. 39417 1,b. - 7) Metapher Sin. D. 4, 3. 15, 9. Sidde. K. zu P. 4,1,32 und 3,48. - 8) das Erscheinen von H und \[\bar{q} \] an der Stelle des Visarga Kâç. zu P. 8,3,48 in der Calc. Ausg.; wohl falsche Lesart für उपाचार.

उपचारिन् (wie eben) adj. auswartend, dienend; mit dem acc.: प्रूहा: स्वधर्म निरुतास्त्रीन्वर्णानुपचारिण: R. 1,6,16.

उपचार (Viute. 91) und उपचारमत् (उप + चा॰) mm. Nn. prr. zweier Kakravartin Schiefner, Lebensb. 232 (2).

उपचार्य m. = उपचर्या H. 473, v. 1.

ত্তবিষ্ঠিন্ (von चि mit ত্ত্তবা) f. N. einer Krankheit, etwa Anschwellung VS. 12, 97.

उपचित s. u. चि mit उप.

उपचिति (wie eben) f. Ansammlung, Vorrath, Fülle: नास्ति त्तित-नापचितिः कदापि पयोद्वृत्तेः खलु चातकस्य क्षेत्रेर. 9. मनसोपचितिं कृत्वा निरस्य च बल्हिष्क्रियाः MBB. 3, 15144.

उपचित्तचित्त (उप-चित्त + चित्ता) m. N. pr. ein Sohn des Papijans Lalir. 300 (ंचित्ति, im Ind.: उपचित्तचित्ति).

उपचेप partic. fut. pass. von चि mit उप P. 3,1,131,Sch. उपचेपपृड 123, Vartt., Sch.

उपच्छ्-द्न (von क्ट्रू mit उप) n. das Bereden, Ueberreden P. 1,3,47, Sch. Daçak. 87,2.

उपच्यर्व (von च्यु mit उप) m. das Sichzudrängen, Andrücken (bei der Begattung): यत्र नार्पपच्यवम्पच्यवं च शितंते RV. 1,28,3.

उपतें (von त्रन् mit उप) adj. hinzukommend, vermehrend: त्रीहियव-योवी रतडपतें पच्छमीधान्यम् ÇAT. BR. 1,1,1,10.

उपजगती (उप + ज°) f. eine Trishtubh, in welcher drei Påda zwölfsilbig sind, R.V. Paåt. 16, 42.

उपजान (von जान mit उप) m. Zusatz, Zuwachs Âçv.Ça.6,7. 9,1. 11,2. नापजान (Anhängset) स्मरम् (der aus dem Körper geschiedene Geist) ह्र्द